J P Sharma

रुद्राष्टाध्यायी

विषय-सूची

विषय	पृ.सं.
रुद्राभिषेक-महत्व	१
रुद्राभिषेक से लाभ	६
शिवपूजनविधि:	१०
स्वस्ति वाचनम्	१३
संकल्प:	१६
गणेशाम्बिकादिपर्श-पूजा	२३
बिल्वाष्टकम्	४२
अङ्गादिपूजा	४८
अष्टोत्तरशिवनाम पूजा	५३
-षडङ्गन्यस:-	६४
अथ प्रथमोध्याय:	६८
अथ द्वितीयोध्याय:	७२
अथ तृतीयोध्याय:	७९
अथ चतुर्थोध्याय:	८५
अथ पञ्चमोध्याय:	९१
अथ षष्ठोध्याय:	११७
अथ सप्तमोध्याय:	१२०
अथ अष्टमोध्याय:	१२४
अथ शान्त्यध्याय:	१४१
अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्रा:	१४८
षडङ्गन्यास:	१५४
अथोत्तरपूजन संकल्प:	१५८
रुद्रीपाठ का विविध– फल	१५९
श्री शंकरजी की आरती	१६७

रुद्राभिषेक-महत्त्व

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः।
शंकरायच मयस्करायच नमः शिवायच शिवतराय च॥

वैदिक परम्परानुसार रुद्राभिषेक का मानव दिनचर्या में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। मानव शरीर रचना वैदिक गठन के अनुरूप है, ऐसा महर्षि प्रणीत अनुसंधानों से प्रमाणित हो चुका है। रुद्राभिषेक से आत्मा शुद्ध एवं सतोगुणी होती है, संकल्प शक्ति बढ़ती है और इससे ज्ञानशक्ति, विचारशक्ति, बुद्धि, श्रद्धा, मेधा, भक्ति तथा पवित्रता में वृद्धि होती है। व्यापार-व्यवसाय, कला-कौशल, शास्त्रानुसंधान और व्यवहार-कुशलता का सफल

सम्पादन उत्साहपूर्वक होता है। इससे सुखमय दीर्घ जीवन के आरोग्य साधनों का स्वत: संचय होता है।

रुद्राभिषेक से प्रत्येक मानव अपनी चेतना को पूर्ण जागृत करके सर्वसमर्थता प्राप्ति के आध्यात्मिक एवं दैवीय मार्ग में अग्रसर होते हुए अपनी साधना परायण दिनचर्या द्वारा विश्व की सामूहिक चेतना में सत्व गुण बढ़ाकर "**भूतल पर स्वर्ग**" का अनुभव कर सकता है।

"**वेद: शिवो शिवो वेद:**" के अनुसार वेद शिव है और शिव वेद है अत: शिव वेदात्मक अथवा वेद स्वरूप है इसीलिए वेद मन्त्रों के द्वारा भगवान् आशुतोष शिव का पूजन, अभिषेक किया जाता है। जैसे-ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है वैसे ही उनकी रौद्र

शक्ति अग्नि, जल, औषधि, वनस्पति आदि पदार्थों में अभिव्याप्त है। समस्त ब्रह्माण्ड को वह अपनी शक्ति से सामर्थ्यवान् बनाते हैं इसलिए उनका नाम रुद्र है। श्वेताश्वरोपनिषद् कहता है कि "**एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः**" (३/२)।

ब्रह्माण्ड में उसी एक परमेश्वर की शक्ति निहित है, उसके अतिरिक्त किसी दूसरे की सत्ता नहीं है। शिव पुराण विद्येश्वर संहिता में "**अहमेव परं ब्रह्म मत्स्वरूपं कला-कलम्**" जैसी शक्तियां निहित हैं। शैवद्वैतवादी "**सर्वं ब्रह्मेति उपासीत सर्वं वै रुद्र इत्यपि**" कहते हैं।

रुद्र प्रत्यक्ष ब्रह्म है। शास्त्रकार भी प्रत्यक्ष ब्रह्म मानते हैं। जब श्रुति "**अजायमानो बहुधा विजायते**" (यजु० ३१/१९)

कहकर यह संकेत करती है कि वह न पैदा होता हुआ भी अनंत रूप में विद्यमान है तब उसका आशय प्रत्यक्ष ब्रह्म कथन से ही है। यजुर्वेद का प्रत्यक्ष ब्रह्म वायु है, अत: उसका प्रथम प्रार्थना मन्त्र है "**इषेत्वा उर्जेत्वा वायवस्थ**" (यजु० १/१)।

ऋग्वेदी का प्रत्यक्ष ब्रह्म अग्नि है अत: उसका मंत्र है "**अग्नि-मीडे पुरोहितम्**"। तैत्तिरीय आरण्यक का "**नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि**" मन्त्र भी प्रत्यक्ष ब्रह्म का समर्थन करता है। यजुर्वेद जब "**नमस्ते रुद्र मन्यव**" के रूप में प्रार्थना करता है तब इसी रुद्र ब्रह्म की उपासना करता है इसीलिए रुद्राभिषेक के पंचम अध्याय से हमें यही शिक्षा प्राप्त होती है कि संसार की समस्त वस्तु जड़-चेतन को नमस्कार करें।

रुद्राभिषेक करने के अनेक विधान दिये गये हैं रुद्राभिषेक, लघुरुद्र, महारुद्र एवं अतिरुद्र क्रमशः उत्तरोत्तर श्रेष्ठ कहे गये हैं।

अभिषेकात्मक श्रेष्ठ पदार्थ

जल से वर्षा, कुशा के जल से शान्ति, दही से पशु प्राप्ति, ईख (गन्ना) के रस से लक्ष्मी प्राप्ति, मधु और घी से धन, तीर्थजल से मोक्ष, दुग्ध से पुत्र प्राप्ति अथवा वन्ध्या, काकवन्ध्या या मृतवत्सा को गो दुग्ध से शीघ्र संतान प्राप्ति, जल की धारा से ज्वर-शान्ति, घृत धारा से वंश-विस्तार, केवल दुग्ध की धारा से प्रमेह रोग की शान्ति और मनोवांछित फलों की पूर्ति, शर्करा मिले हुये दुग्ध से जड़-बुद्धि का निर्मल होना, सरसों के तेल से शत्रु की

बुद्धि में मैत्री भाव जागृत करने तथा रोगों का नाश और शहद से यक्ष्मा रोग की शान्ति तथा पापक्षय होता है। आरोग्य की इच्छा वाले को घृत से, दीर्घायु की इच्छा वाले को दुग्ध से और पुत्रार्थी को चीनी मिश्रित जल से भगवान् शंकर का अभिषेक करना चाहिए।

रुद्राभिषेक से लाभ

* रुद्राभिषेक से सद्‌बुद्धि, सद्‌विचार, सद्‌धर्म और सत्कर्म की ओर प्रवृत्ति होती है।
* रुद्राभिषेक से मानव की आत्मशक्ति, ज्ञानशक्ति और मंत्रशक्ति जागृत होती है।
* रुद्राभिषेक से मानव का जीवन मंगलमय बन जाता है।

* रुद्राभिषेक से मानव में दैवी शक्ति अथवा दैवीय गुणों का प्रादुर्भाव होता है।
* रुद्राभिषेक से अन्त:करण की अपवित्रता, मलविक्षेप और कुसंस्कारों का निवारण होता है।
* रुद्राभिषेक में वैदिक मंत्रों के श्रवण करने से मानव देवता बनकर जगत् के कल्याण करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।
* रुद्राभिषेक से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चतुष्टय पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है।
* रुद्राभिषेक से आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक-इन तापत्रय की निवृत्ति होती है।

* रुद्राभिषेक से संक्रामक रोगों का नाश, शारीरिक समस्त दोषों का नाश, सर्वविध अमंगलों का नाश, पैशाचिक कष्टों से निवृत्ति और सभी प्रकार की विघ्न बाधाएं दूर हो जाती हैं।
* रुद्राभिषेक से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। असाध्य कार्य भी साध्य हो जाते हैं और सर्वदा सर्वत्र विजय होती है।
* रुद्राभिषेक से मानव आरोग्य, विद्या, कीर्ति, पराक्रम, धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि और अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त कर लेता है।
* रुद्राभिषेक से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, संसार का कल्याण होता है और अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, अकाल मृत्यु, महामारी, प्रभृति रोग-शोकादि का शमन हो जाता है।

परम पूज्य **महर्षि महेश योगी जी** के दैवीय निर्देशन एवं आशीर्वाद से वैदिक संस्कृति के उत्थान, दु:खरहित विश्व की संरचना एवं विश्व शांति के उद्देश्य से रुद्राभिषेक, यज्ञ एवं विविध प्रकार के अनुष्ठानों पर अनुसंधान हो रहे हैं और इनके प्रभाव से प्रत्येक व्यक्ति का जीवन समस्याविहीन, दु:खविहीन होगा और ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न एवं आनंद-ज्ञान शक्ति से परिपूर्ण होगा और इससे प्रत्येक के जीवन में पूर्णता का अनुभव होगा।।

शिवपूजनविधिः

यथोक्तस्नानानन्तरं श्वेतं धौतं वस्त्रं परिधाय उपवस्त्रं गृहीत्वा कुशादिविहितासने प्राङ्मुख उपविश्य दक्षिणहस्ते कुशद्वयं धारयेत्:-

पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

त्रिराचमनम्

अन्तर्जानुहस्तः संहताङ्गुलिना शुद्धजलं गृहीत्वा मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठेन वामेनान्वारब्धपाणिना ब्रह्मतीर्थेन पिबेत् -

ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः । ॐ गोविन्दाय नमः।
हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

आसनशुद्धिः

पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः
ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

पवित्रीधारणम्

ॐ प॒वित्रे॑स्थो व्वैष्ण॒व्य॒ौ सवि॒तुर्वं÷
प्रस॒वऽउत्पु॑ना॒म्यच्छि॑द्रेण प॒वित्रे॑ण॒ सूर्य॑स्य र॒श्मिभिं÷
तस्य॑ ते पवित्रपते प॒वित्र॑पूतस्य॒ यत्का॑मः पुने॒तच्छ॑केयम्।

शिखाबन्धनम्

मानस्तोक इति मन्त्रस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः
एको रुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः ।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ।
मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधी र्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ॥

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा शान्तिपाठं पठेयुः

हरिः ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासो
ऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥ देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्न
प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ १ ॥ देवानाम्भद्रा सुमतिर्
ऋजूयतान्देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्त्तताम् ॥ देवानाꣳ
सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान ऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे
॥ २ ॥ तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे वयम्भगमित्रमदितिन्द
क्षमस्रिधम् ॥ अर्य्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती
नः सुभगामयस्करत् ॥ ३ ॥ तन्नो वातो मयो भुवातु भेष
जन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्यौः ॥ तद्ग्रावाणः सोमसुतो

मयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ ४ ॥ तमी-
शानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥
पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये
॥ ५ ॥ स्वस्तिन इन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा
व्वि श्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो
बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः
शुभंय्यावानोव्विदथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वामनवः
सूरचक्षसोव्विश्वेनोदेवा ऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥
भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः

॥ ८ ॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रांनश्चक्राजर
सन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रंपितरोभवंन्तिमानोमद्ध्यारी
रिषतायुर्ग्गन्तोः ॥९॥ अदिंतिर्द्यौरदिंतिरन्तरिंक्ष
मदिंतिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥ विश्वेदेवाऽअदिंतिः
पञ्चजनाऽअदिंतिर्ज्जातमदिंतिर्ज्जनिंत्त्वम् ॥ १० ॥ द्यौः
शान्तिंरन्तरिंक्षꣳशान्तिः प्पृथिवीशान्तिरापःशान्तिरोषंधयः
शान्तिंः ॥ वनस्प्पतंयःशान्तिर्व्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा
शान्तिरेधि ॥ यतोयतः समीहंसेततो नोऽअभंयङ्कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योऽभंयन्नः पशुब्भ्यंः ॥ १२ ॥

संकल्पः

ॐ स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थिति-लयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणत-पारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त-महदहंकार-पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि-वाराह-दंष्ट्राग्र-विराजिते कूर्मानन्त-वासुकि-तक्षक-कुलिक कर्कोटक-

पद्म-महापद्म-शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-
पुण्डरीक-वामन-कुमुदाञ्जन-पुष्पदन्त- सार्वभौम-
सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल- वितल-सुतल-
तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकानामुपरिभागे
पुण्यकृ-न्निवासभूत भूर्लोक- भुवर्लोक-स्वर्लोक-
महर्लोक-जनोलोक-तपोलोक सत्य-लोकाख्य
सप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैल- महावलयनाग
मध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि-राजशेषस्य सहस्रफणा
मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डिते अमरावत्य
शोकवती भोगवती-सिद्धवती-गान्धर्ववती -काञ्ची -

अवन्त्यलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोका
चलवलयिते लवणेक्षु-सुरा सर्पि-र्दधि-क्षीरोदकार्णवपरिवृते
जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च-शाक शाल्मलिपुष्कराख्य
सप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व
चारणभारतेतिनव- खण्डमण्डिते सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत
महासरोरुहा- कारपञ्चाशत् कोटियोजनविस्तीर्ण भूमण्डले
अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिकापुरी
द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-
रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत
प्रतिष्ठिते हरिवर्षकिं पुरुषभारतवर्षयोश्च दक्षिणे

नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल
विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-
सूक्तावन्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल-
लङ्केति- नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी-
क्षिप्रा-यमुना-सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा -कावेरी-
पयोष्णी -कृष्णा-वेण्या-भीमरथी-तुंगभद्रा ताम्रपर्णी-
विशालाक्षी-चर्मण्वती-वेत्रवती-कौशिकी-गण्डकी-
विश्वामित्री सरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेकपुण्य
नदीविराजिते दण्डक-विन्ध्यक-चम्पक-बदरिक-
महीलांगुहेक्षुक नैमिष-कदलिक देवदार्वाख्यदशारण्ययुते

भारतवर्षे सकल देवतानां निवासभूमौ, वेदभूमौ श्रीभगवतो महापुरुषस्य नाभिसरोरुहादुत्पन्नस्य तदाज्ञया प्रवर्तमाने सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणः प्रथमे परार्धे पंचाशदब्दात्मिके व्यतीते द्वितीये परार्धे रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे प्रथमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमे दिवसे अह्नि द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते स्वायम्भुव स्वारोचिषोत्तम तामस रैवत चाक्षुषाख्येषु षट्सु मनुषु व्यतीतेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे महर्षि

ज्ञानयुगीयवैदिकविश्वप्रशासनस्य राजधान्यां पूर्णभूमौ, भारतवर्षस्य ब्रह्मस्थाने, महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्यापीठपरिसरे चान्द्र सौरसावन नाक्षत्र बार्हस्पत्यमानेषु व्यवह्रियमाणेषु तत्र चान्द्र सौरसावनमानानां प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये..... सम्वत्सरे .....उत्तरसहस्त्रद्वयपरिमिते वैक्रमाब्दे .....उत्तर एकोनविंशतिशततमे शालिवाहनशकाब्दे ..... उत्तर एकपञ्चाशच्छततमेयुधिष्ठिर संवत्सरे उत्तर पञ्चविंशति शततमेआद्यशङ्कराचार्य संवत्सरे महर्षिज्ञानयुगीय .....

सम्वत्सरे ..... अयने ..... ऋतौ .....मासे

.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे..... नक्षत्रे

.....योगे..... करणे ..... राशिस्थते श्रीचन्द्रे

..... राशिस्थते श्रीसूर्ये .....राशिस्थते श्रीभौमे

.....राशिस्थते श्रीबुधे..... राशिस्थते श्रीदेवगुरौ

.....राशिस्थते श्रीशुक्रे .....राशिस्थते श्रीशनौ

.....राशिस्थते श्रीराहौ .....राशिस्थते श्रीकेतौ एवं

ग्रहगणगुणविशेषण विशिष्टयां पुण्यायां पुण्यकालेमहापुण्य शुभतिथौ

J P

गणेशाम्बिकयोः पूजनम्

अष्टदलोपरि गणेशंगौरीं च संस्थाप्य

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो
व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो
नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ध्यानम् समर्पयामि।

हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा आवाहयेत्–

*ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा
प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो
मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥*

गौर्यावाहनम्- ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्याम् नमः

इति मन्त्राभ्यां गौरीगणेशयोरावाहनं पूजनं च कुर्यात्।

श्रीसाम्बसदाशिवपरिवारस्य ध्यानं कुर्यात्-

नन्दीश्वरम् पूजनम्-हरिः ॐ आशुः शिशानो वृषभोनभीमोघं नाघनःक्षोभण श्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽएकवीरः शतꣳसेनां ऽअजयत्साकमिन्द्रः।

वीरभद्रपूजनम् – ॐ भद्द्रं कर्ण्णेभिः शृणुयामदेवा भद्द्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ संस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

स्वामिकार्तिकपूजनम्— ॐ यदक्क्रन्दः प्प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्द्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्त्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन् ॥

कुबेरपूजनम्— ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं व्वियूय । इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽउक्तिं यजन्ति ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः साम्बशिवं ध्यायामि।

आवाहनम्-हरिं÷ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः÷॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः÷

त्रिपुरान्तकरं देवं चूडाचन्द्रमहाद्युतिम्।
गजचर्मपरीधानं शिवमावाहयाम्यहम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्-ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी। तयानस्तन्व्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि॥

विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर।
मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

प्राणप्रतिष्ठापनम्-ॐ मनोंजूतिर्ज्जुंषतामाज्ज्यंस्य बृहस्पतिर्ष्यज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टंष्यज्ञठं॰ समिमन्दंधातु। विश्वेंदेवासं ऽइहमांदयन्तामोंऽ३ँ प्रतिंष्ठ॥

अस्यै प्राणः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः प्राणप्रतिष्ठापयामि।

पाद्यम्-ॐ यामिषुंङ्गिरिश न्तहस्तेंबिभर्ष्य स्तंवे। शिवाङ्गिंरित्र्रताङ्कुंरुमाहिंङ्क्षसीः पुरुंषञ्जगंत्॥

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् - ॐ शि॒वे॒न॒ व्वच॑सा त्त्वा॒ गिरि॒ शाच्छा॑ व्वदामसि। यथा॑ नः॒ सर्व्व॒मिज्जग॑दय॒क्ष्मᳬ सु॒मना॒ऽअस॑त्॥

नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्-ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमो दैव्व्योभिषक् ॥ अहींश्च्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव ॥

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

स्नानम्-ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽअरुणऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः ॥ येचैनꣳरुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाꣳ हेडऽईमहे ॥

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि
मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पयःस्नानम्-ॐ पयं÷पृथिव्यां पय ऽओषंधीषु पयों दिव्युन्तरिंक्षे पयों धाः। पयंस्वतीः प्रदिशं÷ सन्तु मह्यंम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानम्-ॐ दधिक्राव्णों ऽअकारिषं जिष्णोरश्वंस्य व्वाजिनं÷। सुरभिनो मुखां करत्प्रण ऽआयूंषि तारिषत् ॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानं-ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानम्-ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्य्यः । माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः ॥

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम् ।
मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नानम्-ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् । अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो ऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्-ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआंश्विना श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्द्रायं पशुपतंये कर्णा यामा ऽअंवलिप्ता रौद्द्रा नभोंरूपाः पार्ज्जन्याः॥

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नानम्- *ॐ नमस्ते० (१-१६)* रुद्रसूक्त *मंत्रों से जलधारा द्वारा अभिषेक करें*-

गन्धोदकस्नानम्- ॐ त्वांगन्धर्व्वा ऽअंखनँ स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिंः । त्वामौंषधे सोमो राजां विद्वान्यक्ष्मांदमुच्यत ॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम् ।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

उद्वर्तनस्नानम्- ॐ अठं० शुनां ते अठं० शुः पृंच्च्यतां परुंषा परुंः । गन्धस्ते सोमंमवतुमदांयरसोऽअच्च्युंतः ॥

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि ।

विजयास्नानम्-ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो विशंल्ल्योबाणांवाँ२ ॥ऽउत॥ अनेशन्नस्यषा ऽइषंवऽआभुरंस्यनिषङ्गधिः ॥

शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम् ।
विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयां समर्पयामि ।

वस्त्रोपवस्त्रम्-ॐअसौयों वसर्प्पंतिनीलंग्ग्रीवो विलोंहितः ॥ उतैनंङ्गोपाऽअंदृश्श्रन्नदृंश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृंड यातिनः ॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्-ॐ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्त्राक्षायमीढुषे॥ अथोषेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्— ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथ मा संदत्स्वः । व्वासो ऽअग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो ॥

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि ।

गन्ध (चन्दन)— ॐ प्प्रमुञ्च धन्न्वंनस्त्वमुभयोरात्क्न्र्योर्ज्ज्याम् ॥ याश्च्चंतेहस्त ऽ इषंवः पराता भंगवोव्वप ॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि।

भस्म—ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सᳬं सृज्ज्यमातृभिष्ट्वं ज्ज्योतिष्मान् पुनरासदः॥

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम्। सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्मं समर्पयामि।

अक्षतः—ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐओषंधीः प्रतिंमोदध्वम्पुष्पंवतीः प्रसूवंरीः। अश्वांऽइव सजित्वंरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि—ॐ नमोंबिल्मिनें चकवचिनेंच नमोंव्वर्म्मिणें चव्वरूथिनेंचनमः श्रुतायंचश्रुत सेनायंचनमोंदुन्दुभ्यायचाह नन्न्यायच॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
काशीवासनिवासी च कालभैरवदर्शनम्।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशङ्करम्।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रियः ॥

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥
श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम्।
पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वरम् ॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः।
त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम्।
तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुराः—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

शमीपत्रम्—ॐ अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्त्वा गृह्णामि बृहद्ग्रावासि वानस्पत्यः स ऽइदं देवेभ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व। हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि॥

अमङ्गलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शमीपत्राणि समर्पयामि।

तुलसी-मञ्जरी—ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः। मा द्यावापृथिवी ऽअभिशोचीर्मान्तरिक्षं मा वनस्पतीन्॥

मिलत्परिमलामोदभृङ्गसङ्गीतसंस्तुताम्।
तुलसीमञ्जरीं मञ्जु अञ्जसा स्वीकुरु प्रभो॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः तुलसीमंजरीं समर्पयामि।

आभूषणम्—ॐ युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय च्छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्॥

वज्र-माणिक्य-वैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आभूषणं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि—ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः॥

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूर—ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्व॒ने शूंघ॒नासो॒
व्वातंप्प्रमियः पतयन्ति य॒ह्वाः। घृतस्य॒ धारा ऽअरु॒षो
न व्वा॒जी काष्ठांभि॒न्दन्नूर्म्मिभि॒ः पिन्वमानः॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यसुखवर्द्धनम्।
शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्—ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिं पुंष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिंवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय माऽमृतात्॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

अङ्गपूजा-

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ॥ १ ॥
ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि ॥ २ ॥

ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ३ ॥
ॐ शम्भवे नमः कटीं पूजयामि ॥ ४ ॥
ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ॥ ५ ॥
ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ६ ॥
ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ॥ ७ ॥
ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥ ८ ॥
ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ९ ॥
ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ १० ॥
ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि ॥ ११ ॥
ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि ॥ १२ ॥
ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥ १३ ॥
ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ १४ ॥

आवरणपूजा—

ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥

ॐ शिवाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाय नमः ॥४॥

ॐ विश्वरूपाय नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥

ॐ भैरवाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥

ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥

ॐ महेशाय नमः ॥११॥

एकादशशक्तिपूजा—

ॐ उमायै नमः ॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः ॥२॥

ॐपार्वत्यै नमः ॥३॥ ॐ गौर्यै नमः ॥४॥

ॐ काल्यै नमः ॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥६॥

ॐ कोटर्यै नमः ॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॥८॥

ॐ ह्रां नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं नमः ॥१०॥

ॐ गङ्गादेव्यै नमः ॥११॥

गणपूजा—

ॐ गणपतये नमः ॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥२॥

ॐपुष्पदन्ताय नमः ॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥४॥

ॐ भैरवाय नमः ॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥६॥

ॐ ईश्वराय नमः ॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥८॥

ॐ नन्दिने नमः ॥९॥ ॐ महाकालाय नमः ॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजा—

ॐ भवाय क्षितिमूर्तये नमः ॥१॥
ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः ॥२॥
ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥३॥
ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥४॥
ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥५॥
ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॥६॥
ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥७॥
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥८॥

एकादश रुद्रपूजा—

ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥
ॐ शर्वाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥४॥

ॐ विश्वरूपिणे नमः ॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥६॥
ॐ कपर्दिने नमः ॥७॥ ॐ भैरवाय नमः ॥८॥
ॐ शूलपाणये नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥
ॐ महेश्वराय नमः ॥११॥

अष्टोत्तरशतशिवनाम पूजा -

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ शिवाय नमः ॥१॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥२॥
ॐ शम्भवे नमः ॥३॥ ॐ पिनाकिने नमः ॥४॥
ॐ शशिशेखराय नमः ॥५॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥६॥
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥
ॐ नीललोहिताय नमः ॥९॥ ॐ शङ्कराय नमः ॥१०॥
ॐ शूलपाणये नमः ॥११॥ ॐ खट्वाङ्गिने नमः ॥१२॥
ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ॥१३॥ ॐ शिपिविष्टाय नमः ॥१४॥
ॐ अम्बिकानाथाय नमः ॥१५॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥१६॥
ॐ भक्तवत्सलाय नमः ॥१७॥ ॐ भवाय नमः ॥१८॥
ॐ शर्वाय नमः ॥१९॥ ॐ त्रिलोकीशाय नमः ॥२०॥
ॐ शितिकण्ठाय नमः ॥२१॥ ॐ शिवाप्रियाय नमः ॥२२॥
ॐ उग्राय नमः ॥२३॥ ॐ कपालिने नमः ॥२४॥

ॐ कामारये नमः ॥२५॥ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ॥२६॥
ॐ गङ्गाधराय नमः ॥२७॥ ॐ ललाटाक्षाय नमः ॥२८॥
ॐ कालकालाय नमः ॥२९॥ ॐ कृपानिधये नमः ॥३०॥
ॐ भीमाय नमः ॥३१॥ ॐ परशुहस्ताय नमः ॥३२॥
ॐ मृगपाणये नमः ॥३३॥ ॐ जटाधराय नमः ॥३४॥
ॐ कैलासवासिने नमः ॥३५॥ ॐ कवचिने नमः ॥३६॥
ॐ कठोराय नमः ॥३७॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ॥३८॥
ॐ वृषाङ्काय नमः ॥३९॥ ॐ वृषभारूढाय नमः ॥४०॥
ॐभस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ॥४१॥ ॐ सामप्रियाय नमः ॥४२॥
ॐ स्वरमयाय नमः ॥४३॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः ॥४४॥
ॐ अश्विनीश्वराय नमः ॥४५॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥४६॥
ॐ परमात्मने नमः ॥४७॥ ॐ सोमसूर्य्याग्निलोचनाय नमः ॥४८॥

ॐ हविषे नमः ॥४९॥ ॐ यज्ञमयाय नमः ॥५०॥
ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ॥५१॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥५२॥
ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥५३॥ ॐ वीरभद्राय नमः ॥५४॥
ॐ गणनाथाय नमः ॥५५॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥५६॥
ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॥५७॥ ॐ दुर्द्धर्षाय नमः ॥५८॥
ॐ गिरीशाय नमः ॥५९॥ ॐ गिरिशाय नमः ॥६०॥
ॐ अनघाय नमः ॥६१॥ ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ॥६२॥
ॐ भर्गाय नमः ॥६३॥ ॐ गिरिधन्वने नमः ॥६४॥
ॐ गिरिप्रियाय नमः ॥६५॥ ॐ अष्टमूर्त्तये नमः ॥६६॥
ॐ अनेकात्मने नमः ॥६७॥ ॐ सात्त्विकाय नमः ॥६८॥
ॐ शुभविग्रहाय नमः ॥६९॥ ॐ शाश्वताय नमः ॥७०॥
ॐ खण्डपरशवे नमः ॥७१॥ ॐ अजाय नमः ॥७२॥

ॐ पाशविमोकाय नमः ॥७३॥ ॐ कृत्तिवाससे नमः ॥७४॥
ॐ पुरारातये नमः ॥७५॥ ॐ भगवते नमः ॥७६॥
ॐ प्रथमाधिपाय नमः ॥७७॥ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ॥७८॥
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ॥७९॥ ॐ जगद्व्यापिने नमः ॥८०॥
ॐ जगद्गुरवे नमः ॥८१॥ ॐ व्योमकेशाय नमः ॥८२॥
ॐ महासेनाय नमः ॥८३॥ ॐ जनकाय नमः ॥८४॥
ॐ चारुविक्रमाय नमः ॥८५॥ ॐ रुद्राय नमः ॥८६॥
ॐ भूतपतये नमः ॥८७॥ ॐ स्थाणवे नमः ॥८८॥
ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥८९॥ ॐ दिगम्बराय नमः ॥९०॥
ॐ मृडाय नमः ॥९१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥९२॥
ॐ देवाय नमः ॥९३॥ ॐ महादेवाय नमः ॥९४॥
ॐ अव्ययाय नमः ॥९५॥ ॐ हरये नमः ॥९६॥

ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः ॥९७॥ ॐ भगनेत्रभिदे नमः ॥९८॥
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ॥९९॥ ॐ अव्यग्राय नमः ॥१००॥
ॐ अव्यक्ताय नमः ॥१०१॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥१०२॥
ॐ दक्षाध्वरहराय नमः ॥१०३॥ ॐ सहस्राक्षाय नमः ॥१०४॥
ॐ तारकाय नमः ॥१०५॥ ॐ हराय नमः ॥१०६॥
ॐ सहस्रपदे नमः ॥१०७॥ ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥१०८॥

धूपम्—ॐ षातेंहेतिम्मींढुष्ट्टमहस्त्तें बभूवंतेधनुं÷ ॥
तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमंयक्ष्म्मयापरिं भुज ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धूपम् समर्पयामि।

दीपम्—ॐ चन्द्रमामनंसोजातश्च्चक्षोः सूर्य्यो
ऽअजायत ॥ श्श्रोत्रांद्द्वायुश्च्चं प्प्राणश्च्च
मुखांदग्ग्निरंजायत ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दीपम् समर्पयामि।

नैवेद्यम्—ॐ नाब्भ्यां ऽआसीदन्तरिंक्षꣳशीर्ष्णोंद्यौः
समंवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्रोत्रात्तथांलोकाँ२ ॥
ऽअंकल्प्पयन् ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यम्समर्पयामि।

ऋतुफलम्—ॐ यत्पुरु॑षेणह॒विषा॑ दे॒वाय॒ज्ञ मत॑न्वत॥ व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्य॑ङ्ग्री॒ष्म इ॒द्ध्मः श॒रद्ध॒विः॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।

करोद्वर्त्तनार्थेगन्धम्—ॐ अ॒ꣳ॒शुना॑ ते अ॒ꣳ॒शुः पृ॑च्यता॒म्परु॑षा॒ परुः॑। ग॒न्धस्ते॒ सोम॑मवतु॒ मदा॑य॒ रसो॒ अच्यु॑तः॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—ॐ नमः पर्णायचपर्णशदायचनमः ऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमःऽआखिदतेचप्रखिदते चनमःऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्च वोनमोनमोवः किरिकेभ्योदेवानाꣳ हृदयेभ्योनमोविचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमःऽआनिर्हतेभ्यः ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः एला-लवंग-पूगीफलं ताम्बूलम् समर्पयामि।

अखण्ड श्रीफलम्—ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः अखण्डश्रीफलं समर्पयामि।

दक्षिणा द्रव्यम्—ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्॥ स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दक्षिणाद्रव्यम् समर्पयामि।

आरार्तिक्यम्—ॐ इदꣳहविः प्प्रजननम्मेऽअस्तुदशवीरꣳसर्व्वगणꣳस्वस्तये॥ आत्त्मसनिप्प्रजासनिं लोकसनं भयसनि॥ अग्निः प्प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्त्वन्नम्प्पयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त॥

पशुसनिं

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आरार्तिक्यम् समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः—ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन्॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्तिदेवाः॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा—ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाᳬसहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

षडङ्गन्यासः-

मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहती छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनो त्त्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामोऽम्‌ ॥ प्रतिष्ठ ॥

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥

अबोद्‌ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगाविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः।

ॐ अबोंद्ध्यग्निः समिधा जनांनांप्प्रतिं धेनुमिंवा यतीमुषासंम्। यह्वा ऽइंव प्प्रवया मुज्जिहांनाः प्प्रभानवंः सिस्त्रतेनाकमच्छं ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअंरतिम्पृंथिव्यावैंश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविंठ सम्म्राजमतिंथिं जनांनामासन्ना पात्त्रं जनयन्तदेवाः ॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः कवचन्यासे विनियोगः

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप् छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः।

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो व्विश्व तो बाहुरुत व्विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ मा नं स्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नों व्वीरान्रुद्र भामिनों व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ध्यानम्

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

अथ शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

अथ प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥ १ ॥ गायत्त्री त्त्रिष्टुब्जगत्त्य

नुष्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्त्युष्णिहांक्कुप्सूचीभिं÷शम्म्यन्तुत्त्वा ॥ २ ॥ द्विपंदाषाश्च्चातुंष्ष्पदास्त्रिपंदाषाश्च्चाषट्पंदाः ॥ विच्छंन्दाषाश्च्चासच्छंन्दाः सूचीभिं÷शम्म्यन्तुत्त्वा ॥ ३ ॥ सहस्तोंमाः सहछंन्दसऽआवृतं÷ सहप्प्रंमाऽऋषयः सप्त्तदैव्व्याः ॥ पूर्व्वेंषाम्पन्थांमनुदृश्यधीराऽअन्न्वालेंभिरेरत्त्थ्योनरश्मीन् ॥ ४ ॥ ॐ यज्जाग्ग्रंतो दूरमुदैति दैवन्तदुंसुप्तस्यतथैवैतिं ॥ दूरङ्ग

मज्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिवसङ्क
ल्पमस्तु ॥ ५ ॥येनकर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञे
कृण्वन्तिविदथेषुधीराः ॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः
प्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ६ ॥
यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं
प्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्क्रियते
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ७ ॥
येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्ष्यत्परिगृहीत
ममृतेनसर्व्वम् ॥येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मे

मनं÷शिवसंङ्कल्प्पमस्तु ॥ ८ ॥ यस्म्मिन्नृच॒ᳪ
सामयजूᳬषियस्म्मिन्न्प्रतिंष्ठितारथनाभा
विंवाराः ॥ यस्मिँमंश्चित्तᳪसर्व्वमोतं
म्प्रजानान्तन्न्मेमनं÷शिवसंङ्कल्प्पमस्तु ॥ ९ ॥
सुषारथिरश्श्वांनिवयन्न्मंनुष्प्यान्न्ने नीयतेभीशुंभि
र्व्वाजिनऽइव ।हृत्त्प्रतिंष्ठंयदंजिरञ्जविंष्ठन्तन्न्मे
मनं÷शिवसंङ्कल्प्पमस्तु ॥ १० ॥

इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

हरिः ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिꣳसर्व्वतस्स्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्द
शाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वं
यद्भूतंयच्च्भाव्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानो
यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्यमहि
मातो ज्ज्यायाँश्च्पूरुषः ॥ पादोऽस्य
विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥

त्त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्त्पुरुंषः पादोंऽस्येहा
भंवत्त्पुनंः ॥ ततोव्विष्ष्वङ्व्व्यक्क्रामत्त्साशनान
शनेऽअभि ॥ ४ ॥ ततोंव्विराडंजायतव्वि
राजोऽअधिपूरुंषः ॥सजातोऽअत्त्यं
रिच्च्यतपश्श्चाद्धूमिमथोंपुरः ॥ ५ ॥
तस्मांद्यज्ञात्त्संर्व्वहुतः सम्भृंतम्पृषदाज्ज्यम् ॥
पशूँस्ताँश्च्चंक्क्रेव्वायव्व्यानारण्ण्यागग्राम्म्या
श्च्चये ॥ ६ ॥ तस्मांद्यज्ञात्त्संर्व्वहुतऽऋचः

सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दाꣳसिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्त
स्म्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्म्मादश्वाऽअजायन्त
येकेचोभयादतः ।गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्मा
ज्जाताऽअजावयः ॥ ८ ॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषि
प्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः ॥ तेनदेवाऽअयजन्त
साद्ध्याऽऋषयश्चये ॥ ९ ॥यत्पुरुषं
व्व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्पयन् ॥
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादा

ऽउच्च्येते ॥ १० ॥ब्ब्राह्म्णोऽस्य्मुखंमासीद्बाहू
रांजन्न्य÷कृत ः ॥ ऊरूतदंस्य्यषद्द्वैश्यं÷पद्ध्याᳫं
शूद्द्रोऽअंजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनंसोजा
तश्च्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥ श्श्रोत्रांदद्वायुश्च्चं
प्प्राणश्च्चमुखांदग्ग्निरंजायत ॥ १२ ॥नाब्भ्यां
ऽआसीदन्तरिंक्षᳫं शीष्ष्णों द्यौ ःसमंवर्त्तत ॥
पद्ध्याम्भूमिर्द्दिशः श्श्रोत्रात्तथांलोकाँ२ ॥
ऽअंकल्प्पयन् ॥ १३ ॥यत्पुरुंषेणहविषां

दे॒वा य॒ज्ञमतं॑न्वत ॥ व॒स॒न्तो॑ऽस्यासी॒

दाज्यं॑ग्री॒ष्मऽइ॒ध्मः॒ शर॒द्ध॒विः ॥ १४ ॥

स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः ॥

दे॒वा यद्य॒ज्ञन्त॑न्वा॒नाऽअब॑ध्न॒न्पुरु॑षम्प॒शुम्

॥ १५ ॥ य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वास्तानि॒ धर्म्मा॑णि

प्र॒थ॒मान्या॑सन् ॥ ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्त॒

यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः स॑न्ति दे॒वाः ॥ १६ ॥ अ॒द्भ्यः

सम्भृ॑तः पृथि॒व्यै रसा॑च्च वि॒श्वक॑र्म्मण॒ः

समंवर्त्तताग्रे ॥ तस्यत्त्वष्ट्रांव्विदधंद्रूपमें
तितन्मर्त्त्यस्यदेवत्त्वमाजानमग्रे ॥ १७ ॥
व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तंमादित्यवंर्ण्णन्तमंसः
परस्तांत् ॥ तमेवव्विंदित्त्वातिंमृत्युमेंतिनान्यः
पन्थांव्विद्यतेऽयंनाय ॥१८ ॥ प्रजापंतिश्च्चरति
गर्ब्भेऽअन्तरजांयमानोबहुधाव्विजांयते ॥
तस्ययोनिम्परिंपश्यन्तिधीरास्तस्मिंन्ह त
स्थुर्ब्भुवंनानिव्विश्वां ॥ १९ ॥ योदेवेभ्यं

ऽआतपंतियोदेवानांम्पुरोहिंतः ॥ पूर्व्वो
योदेवेब्भ्योंजातोनमोंरुचायब्राह्मंये ॥ २० ॥
रुचम्ब्राह्मञ्जनयंन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदंब्ब्रुवन् ॥
यस्त्वैवंब्ब्राह्मणोविद्द्यात्तस्यंदेवाऽअंसन्वशें
॥ २१ ॥श्रीश्चंतेलक्ष्मीश्चपत्त्न्यांवहोरात्रे
पार्श्वेनक्षंत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तंम् ॥ इष्णन्निं
षाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोकम्मंऽइषाण ॥ २२ ॥

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्याय ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

हरिः ॐ आशुः शिशानोव्वृषभोनभीमोघ
नाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रन्दनोनिमिष
ऽएकवीरःशतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः॥ १॥
सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्कारेण
दुश्च्यवनेनधृष्णुना॥ तदिन्द्रेणजयत
तत्सहध्वंयुधोनरऽइषुहस्तेनवृष्णा॥ २॥
सऽइषुहस्तैःसनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣲस्रष्टा

सयुधऽइन्द्रोगणेन ॥ सःसृष्टजित्सोमपा
बाहुशर्ध्युग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥
बृहस्पते परिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ२ ॥
ऽअपबाधमानः ॥ प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणोयुधा
जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥ ४ ॥
बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी
सहमानऽउग्र३ ॥ अभिवीरोऽअभिसत्त्वा
सहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥ ५ ॥
गोत्रभिदङ्गोविदंव्वज्रबाहुञ्जयन्तमज्मं

प्प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमꣳसंजाताऽअनुवीर
यद्ध्वमिन्द्रꣳसखायोऽअनुसꣳरभद्ध्वम् ॥ ६ ॥
अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोव्वीरः
शतमन्युरिन्द्रः ॥ दुश्च्यवनः पृतनाषाड्
युद्ध्योऽस्माकꣳसेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥ ७ ॥
इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः
पुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जती
नाञ्जयन्तीनाम्मरुतोष्वन्त्वग्रम् ॥ ८ ॥
इन्द्रस्यव्वृष्ण्योव्वरुणस्यराज्ञऽआदित्या-

नाम्मरुताꣳशर्द्धऽउग्रम्॥ महामनसाम्भुव
नच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात्॥ ९॥
उद्धर्षयमघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामका-
नाम्मनाꣳसि॥ उद्वृत्रहन्वाजिनांव्वाजि-
नान्युद्रथानाञ्जयतांयन्तुघोषाः॥ १०॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजेष्वस्माकंया
ऽइषवस्ताजयन्तु॥अस्माकंव्वीराऽउत्तरे
भवन्त्वस्माँ२ऽउदेवाऽअवताहवेषु॥ ११॥

अमीषांञ्चित्तम्प्रंतिलोभयंन्तीगृहाणाङ्गांन्यप्प्वे
परेंहि ।।अभिप्प्रेहि निर्द्दंहहृत्त्सुशोकैंरन्धेना
मित्राँस्तमंसासचन्ताम् ।। १२ ।। अवंसृष्ट्टा
परांपतशरंव्व्येब्ब्रह्मंसंᳪशिते ।। गच्छामित्रान्प्प्र
पंद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिंषᳪ ।। १३ ।। प्प्रेता
जयंतानरऽइन्द्रोंवᳪशर्म्मंयच्छतु ।। उग्ग्रावं÷सन्तु
बाहवोंनाधृष्ष्यायथासंथ ।। १४ ।। असौयासेनां
मरुतᳪपरेंषामब्भ्यैतिंनऽओजंसास्प्पर्द्धंमाना ।।

ताङ्गूं हततमसापंव्व्रतेनषथामीऽअन्न्यो
ऽअन्न्यन्नजानन् ॥ १५ ॥ षत्रंबाणाःसम्पतंन्ति
कुमाराव्विंशिखाऽइंव ॥ तन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पति
रदिंतिः शर्म्मषच्छतुव्विᳲश्वाहाशर्म्मषच्छतु
॥ १६ ॥मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामि
सोमंस्त्वाराजामृतेनानुंवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयो
व्वरुंणस्तेकृणोतुजयंन्तन्त्वानुंदेवामंदन्तु ॥ १७ ॥

इति रुद्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

हरिः ॐ विब्भ्राड्बृहत्त्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वा
युर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ॥ व्वातंजूतोषो
ऽअभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाव्वि
राजति ॥ १ ॥उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्ति
केतवः ॥ दृशेव्विश्श्वाय सूर्य्यम् ॥ २ ॥
येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२ ॥ऽअनु ॥
त्वंव्वरुणपश्श्यसि ॥ ३ ॥ दैव्व्यावद्ध्वर्य्यू

ऽआगंतꣳ रथेंनसूर्य्यत्त्वचा ॥ मद्ध्वांयज्ञꣳ
समंञ्जाथे ।तम्प्रत्त्नथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानाम्
॥ ४ ।तम्प्रत्त्नथांपूर्व्वथां विश्वथेमथांज्ज्येष्ठतां
तिम्बर्हिषदंꣳस्वर्व्विदम् ॥ प्प्रतीचीनंव्वृजनंन्दोह
सेधुनिंमाशुञ्जयंन्तमनुयासुव्वर्द्धसे ॥ ५ ॥
अयंव्वेनश्च्चोदयत्पृश्निंगर्ब्भाज्ज्योतिंर्ज्जरायू
रजंसोव्विमानें ॥ इममपाꣳसंङ्गमेसूर्य्यंस्य
शिशुन्नव्विप्प्रांमतिभींरिहन्न्ति ॥ ६ ॥

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य
व्वरुणस्याग्ग्नेः ॥ आप्प्रा द्यावापृथिवी
ऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्त्माजगतस्तस्थुषश्च्च
॥ ७ ॥आनऽइडाभिर्व्विदथेसुशस्तिव्विश्वानरः
सवितादेवऽएतु ॥ अपियथायुवानोमत्त्सथानो
व्विश्वञ्जगदभिपित्त्वेमनीषा ॥ ८ ॥ यदद्यकच्च
व्वृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ॥सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे
॥९ ॥तरणिर्व्विश्वदर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥

 विश्वमाभांसिरोचनम् ॥ १० ॥ तत्त्सूर्य्यस्य
देवत्त्वन्तन्महित्त्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्विततं
सञ्जभार ॥ यदेदयुक्तहरितः सधस्त्थादा
द्रात्रीव्वासंस्तनुतेसिमस्म्मै ॥ ११ ॥ तन्मित्रस्य
व्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुते द्यो
रुपस्त्थे ॥ अनन्तमन्न्यद्द्रुशदस्यपाजः कृष्ण
मन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ १२ ॥ बण्णमहाँ२ ॥
ऽअसिसूर्य्य बडादित्त्य महाँ२ ॥ऽअसि ॥

मह॒स्तेंस॒तोमंहि॒मापंनस्यते॒ऽद्धादेंवम॒हाँ२ ॥
ऽअंसि ॥ १३ ॥ बट्सूं॑र्य॒ श्रवंसाम॒हाँ२ ॥ऽ
अंसिस॒त्रादेंवम॒हाँ२ ॥ऽअंसि ॥ म॒ह्नाद्॒वानांम
सु॒र्य॒॑ ÷ पु॒रोहिंतोवि॒भुज्ज्योति॒रदांभ्यम्
॥ १४ ॥श्रायंन्तऽइव॒सूर्यं॒ विश्वेदिन्द्रंस्य
भक्षत ॥वसूंनिजा॒तेजनंमानऽओजंसाप्रतिं
भा॒गन्नदींधिम ॥१५ ॥अ॒द्यादेंवा॒ऽउदिंता॒सूर्य॑-
स्य॒निरंहंसःपिपृ॒ता निरंव॒द्यात् ॥ तन्नोंमि॒त्रो

व्वरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी
ऽउतद्यौः ॥१६ ॥आकृष्णेनरजसावर्त्त
मानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च ॥हिरण्ययेन
सवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ १७ ॥

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे
नमः ॥ बाहुभ्यामुतते नमः ॥ १ ॥
यातेरुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी ॥
तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचा
कशीहि ॥ २ ॥ यामिषुङ्गिरिश न्तहस्तेबिभर्ष्यस्त
वे ॥ शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरुमाहिꣳसीः
पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥ शिवेनव्वचसात्त्वागिरि

शाच्छांव्वदामसि ॥ यथां नः सर्व्वमिज्जगं
दयक्ष्मꣳ सुमनाऽअसंत् ॥ ४ ॥ अद्ध्यंवोच
दधिवक्क्ताप्प्रंथमोदैव्व्योंभिषक् ॥ अहींश्च
सर्व्वाञ्ञ्जंभयन्त्सर्व्वांश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीः
परांसुव ॥ ५ ॥असौ यस्ताम्म्रोऽअंरुणऽउत
बब्भ्रुः सुंमङ्गलंः ॥ येचैनꣳ रुद्द्राऽअभितोंदिक्षु
श्श्रिताः सहस्स्रशोऽवैषाꣳ हेडंऽईमहे ॥ ६ ॥
असौयोंऽवसर्प्पंतिनीलंग्ग्रीवोव्विलोंहितः ॥

उतैनं ङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सद्दृष्टोमृड
यातिनः ॥ ७ ॥ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्रा
क्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्ते
ब्भ्योऽकरन्नमः ॥ ८ ॥ प्प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमु-
भयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् ॥ याश्च्चतेहस्तऽ
इषवः पराताभगवोव्वप ॥ ९ ॥ व्विज्ज्य
न्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्योबाणवाँ२ ॥ऽउत ॥
अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥ १० ॥

याते॑हे॒तिर्म्मी॑ढुष्ट्ट॒म ह॑स्ते॑ ब॒भूव॑ते॒धनु॑÷ ॥
तया॒स्स्मान्वि॒॰श्वत॒स्त्वम॑य॒क्ष्मम॑या॒परि॑
भुज ॥ ११ ॥ परि॑ते॒धन्न्व॑नोहे॒ति॒रस्स्मान्न्वृ॑णक्तु
वि॒श्वत॑÷ ॥ अथो॒यऽइ॑षुधिस्तवा॒रेऽअ॒स्स्मन्निधे॑
हि॒तम् ॥ १२ ॥ अ॒व॒तत्त्य॒धनु॒ष्ट्व६ सह॑स्स्रा
क्ष॒शते॑षुधे ॥ नि॒शीर्ष॑श॒ल्ल्याना॒म्मुखा॑
शि॒वोन॑÷सु॒मना॑भव ॥ १३ ॥ नम॑स्त॒ऽआयु॑
धा॒यानां॑ततायधृष्ष्णवे॑ ॥ उ॒भाब्भ्यां॑मुत॒तेनमो॑

बाहुब्भ्यान्तवधन्न्वंने ॥ १४ ॥ मानोंमहान्तं
मुतमानों ऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानंऽ
उक्षितम् ॥ मानोंव्वधीः पितरम्मोतंमातरम्मानं:
प्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्ररीरिषः ॥ १५ ॥ मानंस्तोके
तनंयेमानऽआयुंषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेंषु
रीरिषः ॥ मानोंव्वीरान्नुद्द्रभामिनों
व्वधीर्हविष्मंन्तः सदमित्त्वांहवामहे ॥ १६ ॥
नमोहिरंण्ण्यबाहवेसेनान्न्येदिशाञ्चपतंये

नमोनमोव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पत
येनमोनमः शष्पिञ्जरायत्त्विषीमते
पथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशायोपवीतिने
पुष्टानाम्पतयेनमोनमोबब्भ्लुशाय ॥ १७ ॥
नमोबब्भ्लुशायव्व्याधिनेऽन्नानाम्पतयेन
मोनमोभवस्यहेत्त्यैजगताम्पतयेनमोनमो
रुद्रायाततायिनेक्षेत्त्राणाम्पतयेनमोनमः सूताया
हन्त्त्यैव्वनानाम्पतयेनमोनमोरोहिताय ॥ १८ ॥

नमोरोहिंतायस्थपतयेव्वृक्षाणाम्पतयेनमोनमो
भुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषंधीनाम्पतयेनमोनमो
मन्त्रिणेव्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्घो
षायाक्रन्दयंतेपत्तीनाम्पतयेनमोनमः÷
कृत्स्नायतया॥ ११॥ नमः÷कृत्स्नायतयाधावंते
सत्त्वंनाम्पतयेनमोनमः÷ सहमानायनिव्याधिन
ऽआव्याधिनीनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणे
ककुभायस्तेनानाम्पतयेनमोनमोनिचेरवे

परिचरायारंण्ण्यानाम्पतंयेनमोनमोव्वञ्चते ॥ २० ॥
नमो व्वञ्चंते परि वञ्चंते स्तायूनाम्पतं
येनमोनमोंनिषङ्गिणंऽइषुधिमतेतस्कंराणा
म्पतंये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांस
सद्भ्योमुष्णताम्पतंयेनमोनमोंऽसिमद्भ्यो
नक्तञ्चरंद्भ्योव्विकृन्तानाम्पतंयेनमः ॥ २१ ॥
नमंऽउष्णीषिणेंगिरिचरायंकुलुञ्चानाम्पतं
येनमोनमंऽइषुमद्भ्योंधन्वायिभ्यंश्च्च

वोनमोनमंऽआतन्वानेभ्यं÷ प्रतिदधांनेभ्य
श्चवोनमोनमंऽआयच्छद्भ्योऽस्यंद्भ्य
श्चवोनमोनमोंव्विसृजद्भ्यं÷ ॥ २२ ॥
नमो व्विसृजद्भ्यो व्विद्ध्यंद्भ्य
श्चवोनमोनमं÷स्वपद्भ्योजाग्ग्रंद्भ्य
श्चवोनमोनमः शयानेभ्यऽआसीने
भ्यश्चवोनमोनमस्तिष्ठंद्भ्योधावंद्
भ्यश्चवोनमोनमं÷सभाभ्यं÷ ॥ २३ ॥

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमो
ऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नमऽआव्या
धिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो
नमऽउगणाभ्यस्तृंहतीभ्यश्च वो नमो न
मो गणेभ्यः ॥ २४ ॥ नमो गणेभ्यो
गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपति
भ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्य
श्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्व

रूपेब्भ्यश्च्वो नमो नमः सेनाब्भ्यः ॥ २५ ॥
नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्च्वो नमो नमो
रथिब्भ्यो ऽअरथेब्भ्यश्च्वो नमो नमः
क्षत्तृब्भ्यः सङ्ग्रहीतृब्भ्यश्च्वो नमो न
मो महद्भ्यो ऽअर्भकेब्भ्यश्च्वो नमः
॥ २६ ॥नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च्वो
नमो नमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च्वो
नमो नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्च्वो

नमोनमः श्वनिभ्योमृगयुभ्यंश्च वोनमोनमः
श्वभ्यः ॥ २७ ॥नमः श्वभ्यः श्वपति
भ्यश्चवोनमोनमोभवायंचरुद्रायंचनमः
शर्वायंचपशुपतंयेचनमोनीलंग्ग्रीवायच
शितिकण्ठायचनमः कपर्द्दिने ॥ २८ ॥
नमः कपर्द्दिने चव्युप्तकेशायच नमः
सहस्त्राक्षायंचशतधंन्वनेचनमोगिरिशयाय
चशिपिविष्टायंचनमोमीढुष्टंमायचेषुंमतेचनमो

ह्रस्वाय ॥ २९ ॥ नमोह्रस्वायचव्वामनायचनमो
बृहतेचव्वर्षीयसेचनमोव्वृद्धायचसवृधेचनमो
ऽग्र्यायचप्प्रथमायचनमऽआशवे ॥ ३० ॥
नमऽआशवेचाजिरायचनमः शीग्घ्र्यायचशीब्भ्या
यचनमऽ ऊर्म्म्यायचावस्वन्न्यायचनमोना
देयायचद्द्वीप्प्यायच ॥ ३१ ॥ नमोज्ज्येष्ठाय
चकनिष्ठायचनमः पूर्व्वजायचापरजाय
चनमोमद्ध्यमायचापगल्भायचनमो

जघन्न्यायच बुध्न्यायचनमः सोभ्यांय ॥ ३२ ॥

नमः सोभ्यांयचप्प्रतिसर्ष्यायचनमो या

म्म्यायच क्षेम्म्यायच नमः श्लोक्क्याय

यचावसान्न्यायचनमऽउर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायच

नमोव्वन्न्याय ॥ ३३ ॥ नमोव्वन्न्यायचकक्ष्या

यचनमः श्रवायचप्प्रतिश्रवायचनमऽ

आशुषेणायचाशुरथायचनमः शूरायचा

वभेदिनेचनमोबिल्मिने ॥ ३४ ॥ नमोबिल्मिने

चकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणे चव्वरूथिनेचनमः
श्श्रुतायचश्श्रुतसेनायचनमोदुन्दुब्भ्यायचाह
नन्न्यायचनमोधृष्ष्णवे ॥ ३५ ॥ नमोधृष्ष्णवे
चप्प्रमृशायचनमोनिषङ्गिणेचेषुधिमते
चनमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमःस्वायुधाय
चसुधन्न्वनेच ॥ ३६ ॥ नमःस्स्रुत्यायचपत्थ्याय
चनमःकाट्यायचनीप्प्यायचनमःकुल्ल्याय
चसरस्स्यायचनमोनादेया यचव्वैशन्तायचनमः

कूप्प्याय ॥ ३७ ॥ नमः कूप्प्यायचावट्ट्या
यचनमोव्वीद्ध्र्यायचातप्प्यायचनमो
मेग्घ्यायचव्विद्युत्त्यायचनमोव्वर्ष्यायचा
ऽवर्ष्यायचनमोऽवात्त्याय ॥ ३८ ॥
नमोव्वात्त्यायचरेष्म्म्यायचनमोव्वास्तव्व्या
यचव्वास्तुपायचनमः सोमायचरुद्द्रायचन
मस्ताम्म्रायचारुणायचनमः शङ्गवे ॥ ३९ ॥
नमः शङ्गवेचपशुपतयेचनमऽउग्ग्रायच

भी॒माय॑च॒नमो॑ऽग्ग्रेव॒धाय॑चदू॒रेव॒धाय॑च॒नमो॑
ह॒न्त्रेच॒हनी॑यसेच॒नमो॑ वृ॒क्षेब्भ्यो॒हरि॑केशेब्भ्यो॒
नम॑स्ता॒राय॑ ॥ ४० ॥ नम॑ः शम्भ॒वाय॑चमयो
भ॒वाय॑ च॒नम॑ः शङ्क॒राय॑चमयस्क॒राय॑च॒नम॑ः
शि॒वाय॑चशि॒वत॑रायच ॥ ४१ ॥ नम॒ः पार्य्या॑य
चावा॒र्य्या॒य॑च॒नम॑ः प्र॒तर॑णायचो॒त्तर॑णा
यच॒नम॒स्तीर्थ्या॑यच॒कूल्ल्या॑यच॒नम॒ः
शष्प्या॑यच॒फेन्न्या॑यच॒नम॑ः सिक॒त्त्या॒य ॥ ४२ ॥

 नमः सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च नमः

किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च

पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्प्रपत्थ्याय च

नमो व्व्रज्याय ॥ ४३ ॥ नमो व्व्रज्याय च

गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्प्याय च गेह्याय च

नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च

गह्वरेष्ठाय च नमः शुष्क्क्याय ॥ ४४ ॥ नमः

शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च नमः पाꣳसव्याय च

रजस्यायच नमोलोप्प्यायचोलप्प्यायच
नमऽऊर्व्व्यायच सूर्व्व्यायच नमं÷पर्ण्णाय
॥ ४५ ॥ नमं÷पर्ण्णायंचपर्ण्णशदायंचनमं
ऽउद्गुरमांणायचाभिघ्नतेचनमंऽआखिदतेचं
प्रखिदतेचनमंऽइषुकृद्ब्भ्यो धनुष्कृद्ब्भ्य
श्च्चवो नमोनमों वः किरिकेब्भ्यों देवानाꣳ
हृदंयेब्भ्यो नमों विचिन्न्वत्केब्भ्यो नमों
विक्षिणत्केब्भ्यो नमंऽआनिर्हतेब्भ्यं÷ ॥ ४६ ॥

द्रापे ऽअन्धंसस्पते दरिंद्र नीलंलोहित ॥
आसाम्प्रजानांमेषाम्पंशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचं
नः किञ्चनामंमत् ॥ ४७ ॥ इमारुद्रायंतवसें
कपर्द्दिनेंक्षयद्वींरायप्रभंरामहेमतीः ॥ यथाशम
संद्द्विपदेचतुंष्पदेविश्वंम्पुष्टङ्ग्रामेंऽअस्म्मन्न
नातुरम् ॥ ४८ ॥ यातेंरुद्रशिवातनूःशिवा
विश्वाहांभेषजी ॥ शिवारुतस्यंभेषजीतयांनो
मृडजीवसें ॥ ४९ ॥ परिंनोरुद्रस्यंहेतिर्व्वृंणक्तु

परि॑त्त्वे॒षस्य॑दुर्म्म॒ति र॑घा॒योः ॥ अव॑स्स्थि॒रा म॒घ
व॑द्भ्यस्तनुष्व॒मीड्ढ्व॑स्तो॒काय॒तन॑यायमृड
॥ ५० ॥ मीढु॑ष्टम॒ शिव॑तमशि॒वो नः॑
सु मना॑ भव ॥प॒र॒ मे वृ॒ क्षऽआयु॑धन्नि॒धाय॒
कृत्तिं॒व्वसा॑न॒ऽआच॑र॒पिना॑क॒म्बिभ्र॒दाग॑हि
॥ ५१ ॥ विकि॑रिद्र॒ विलो॑हित॒ नम॑स्तेऽअ
स्तुभगवः ॥यास्ते॑स॒हस्र॑ꣳहे॒तयो॒ऽन्यम॒स्मन्निव॑
पन्तु॒ताः ॥ ५२ ॥ स॒हस्रा॑णिसहस्र॒शोबा॒ह्वोस्तव॑

हे॒तय॑÷ ॥ तासा॒मीशा॑नो भगवः परा॒चीना॒मुखा॑

कृधि ॥ ५३ ॥ असं॑ख्याता स॒हस्रा॑णि॒ ये रु॒द्रा

ऽअधि॒भूम्या॑म् । तेषा॑ᳪ सहस्रयोज॒नेऽव॒धन्वा॑नि

तन्मसि ॥ ५४ ॥ अ॒स्मिन्म॑ह॒त्य॒र्ण॒वे॒

ऽन्तरि॑क्षे भ॒वाऽअधि॑ ॥ तेषा॑ᳪ सहस्रयोज॒ने

ऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि ॥ ५५ ॥ नील॑ग्रीवाः

शिति॒क॒ण्ठा॒ दिव॑ᳪ रु॒द्राऽउप॑श्रिताः ॥

तेषा॑ᳪ सहस्रयोज॒नेऽव॒धन्वा॑ नितन्मसि ॥ ५६ ॥

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः
क्षमाचराः ॥ तेषाँ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानि
तन्न्मसि ॥ ५७ ॥ षे व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा
नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ॥ तेषाँ सहस्र
योजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥ ५८ ॥ षे भूताना
मधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ॥
तेषाँ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥ ५९ ॥
षे पथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्य्युधः ॥

तेषाᳬं सहस्रयोज॒नेऽव॒ध न्वाᳬनितन्मसि ॥ ६० ॥
येती॒र्त्थानिᳬप्र॒चरᳬन्तिसृकाहᳬस्तानिष॒ङ्गिणᳬः ॥
तेषाᳬं सहस्रयोज॒नेऽव॒धन्वाᳬनितन्मसि ॥ ६१ ॥
येन्नेᳬषुव्वि॒विद्ध्यᳬन्ति॒पात्रेᳬषु॒पिबᳬन्त॒ोजनाᳬन् ॥
तेषाᳬं सहस्र योज॒नेऽव॒धन्वाᳬनितन्मसि ॥ ६२ ॥
यऽए॒तावᳬन्तश्च॒भूयाᳬं सश्च॒दिशोᳬरु॒द्रा
व्विᳬतस्त्थि॒रे ॥ तेषाᳬं सहस्रयो॒जने॒ऽवधन्वाᳬनि
तन्मसि ॥ ६३ ॥ नमोᳬऽस्तुरु॒द्रेब्भ्य॒ोयेदि॒वि

येषांव्वर्षमिषंवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दश
दक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः ॥
तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुते
यन्द्विष्म्मोयश्च्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः
॥ ६४ ॥ नमोऽस्तुरुद्द्रेब्भ्योयेऽन्तरिक्षेयेषां
व्वातऽइषवः ।।तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणा
दशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमो
ऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मो

यश्चनो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६५ ॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६६ ॥

इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

हरिः ॐ व्वयꣳ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु
बिब्भ्रतः ॥ प्प्रजावन्तः सचेमहि ॥ १ ॥
एष ते रुद्द्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकया तञ्जु
षस्व स्वाहैष ते रुद्द्र भाग ऽआखुस्ते पशुः ॥ २ ॥
अव रुद्द्रमदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम् ॥
यथा नो व्वस्यसस्करद्यथा नः श्श्रेयसस्करद्यथा
नो व्व्यवसाययात् ॥ ३ ॥ भेषजमसि भेषजङ्गवे

ऽश्श्वांयपुरुंषायभेषजम् ॥ सुखम्मेषायंमेष्ष्यै

॥ ४ ॥ त्र्यंम्बकं ऽयजामहे सुगन्धिम्पुं ष्टि

वर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिंवबन्धंनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीय

मामृतांत् ॥ त्र्यंम्बकं ऽयजामहेसुगन्धिम्पंति

वेदंनम् ॥ उर्व्वारुकमिंवबन्धंनादितोमुंक्षीय

मामुतं÷ ॥ ५ ॥ एतत्तेंरुद्द्राऽवसन्तेनंपरो

मूजंवतोऽतींहि ॥ अवंततधन्न्वापिनांकावसः

कृत्तिंवासाऽअहिंःसन्नःशिवोऽतींहि ॥ ६ ॥

त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु
त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥ ७ ॥ शिवोना
मासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिᳯ
सीः ॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्प्रजननाय
रायस्प्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ॥ ८ ॥

इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च
धुनिश्च ॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः
स्वाहा ॥ १ ॥ अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्रेण
पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना ॥ शर्वम्मतस्ना
भ्यामीशानम्मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्ये
नोग्रन्देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि
कोश्याभ्याम् ॥ २ ॥ उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳ

सौव्व्रंत्त्येनरुद्द्रन्दौर्व्व्रीत्त्ये नेन्द्रं म्प्रक्क्रीडेनंमरुतो
बलेंनसाद्ध्यान्प्रमुदां ॥ भवस्यकण्ठ्यं
रुद्द्रस्यांन्तः पाश्श्वर्यम्मंहादेवस्यषकृच्छर्व्वस्यं
व्वनिष्ठुःपंशुपतेंः पुरीतत् ॥ ३ ॥ लोमंब्भ्यः
स्वाहालोमंब्भ्यः स्वाहांत्त्वचेस्वाहांत्त्वचेस्वाहा
लोहिंतायस्वाहालोहिंतायस्वाहामेदोंब्भ्यः
स्वाहामेदोंब्भ्यः स्वाहां ॥ माᳬसेब्भ्यः स्वाहां
माᳬसेब्भ्यः स्वाहास्न्नावंब्भ्यः स्वाहा

स्नावभ्यः स्वाहाऽस्थभ्यः स्वाहाऽस्थभ्यः
स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा ॥
रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ॥ ४ ॥ आयासाय
स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा
वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा ॥ शुचे स्वाहा
शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा
॥ ५ ॥ तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय
स्वाहा तप्साय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा ॥ निष्कृत्यै

स्वाहाप्प्रायंश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥ ६ ॥ षमाय स्वाहाऽन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावा पृथिवीभ्याꣳ स्वाहा ॥ ७ ॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमोऽध्यायः

हरिः ॐ व्वाजश्च मे प्प्रसवश्च मे
प्प्रयतिश्च मे प्प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे
क्क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्श्लोकश्च मे श्श्रवश्च मे
श्श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे षज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥ १ ॥ प्प्राणश्च मेऽपानश्च मे
व्व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च मऽआधीतञ्च मे
व्वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्श्रोत्रञ्च मे

दक्षंश्च्चमे बलंञ्चमे यज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २ ॥
ओजंश्च्चमे सहंश्च्चम ऽआत्माचंमे तनूश्च्चंमे
शर्म्मं चमे व्वर्म्मं चमे ऽङ्गांनिचमे ऽस्थींनिचमे
परूंᳬषिचमे शरींराणिचम ऽआयुंश्च्चमे
जराचंमेय ज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ ३ ॥ ज्ज्यैष्ठ्यंञ्चम
ऽआधिंपत्त्यञ्चमे मन्न्युश्चंमे भामंश्च्च मे
ऽमंश्च्च मे ऽम्भंश्च्चामेजेमाचंमेमहिमाचंमे
व्वरिमाचंमेप्प्रथिमाचंमेव्वर्षिमाचंमेद्द्राघिमाचंमे

व्वृद्धञ्च मे व्वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

॥ ४ ॥ (न०) ॥ सत्त्यञ्च मे श्श्रद्धा च मे जगच्च मे

धनञ्च मे व्विश्श्वञ्च मे महश्च मे क्क्रीडा च मे

मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्ष्यमाणञ्च मे

सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ ५ ॥

ऋतञ्च मेऽमृतञ्च मेऽयक्ष्मञ्च मेऽनामयच्च मे

जीवातुश्च मे दीर्घायुत्त्वञ्च मेऽनमित्रञ्च मे

ऽभयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे

सुदिनञ्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ यन्ताचमे
धर्त्ताचमे क्षेमश्चमे धृतिश्चमे विश्वञ्चमे
महश्चमे संविच्चमे ज्ञात्रञ्चमे सूश्चमे
प्रसूश्चमे सीरञ्चमे लयश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम्
॥७॥ शञ्चमे मयश्चमे प्रियञ्चमेऽनुकामश्चमे
कामश्चमे सौमनसश्चमे भगश्चमे द्रविणञ्चमे
भद्रञ्चमे श्रेयश्चमे वसीयश्चमे यशश्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ८ ॥ (न०) ॥ ऊर्क्चमे

सूनृतांचमेपयंश्च्चमेरसंश्च्चमेघृतञ्चंमेमधुंचमे सगिंधश्च्चामे सपींतिश्च्चामे कृषिश्च्चांमे व्वृष्टिश्च्चामे जैत्रंञ्चमऽऔद्भिंद्यञ्चमे यज्ञेनं कल्प्पन्ताम् ॥ ९ ॥ रयिश्च्चंमेरायंश्च्चमे पुष्टञ्चंमे पुष्टिंश्च्चमे व्विभुचंमेप्प्रभुचंमे पूर्णञ्चंमेपूर्णतंरञ्चमेकुयंवञ्चमेऽक्षितञ्चमे ऽन्नंञ्चमेऽक्षुच्चामेयज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ १० ॥ व्वित्तञ्चंमेव्वेद्यंञ्चमेभूतञ्चंमेभविष्ष्यच्चांमे

सुगञ्चंमे सुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चंमऽऋद्धिश्च्यमे
क्लृप्तञ्चंमेक्लृप्तिंश्च्यमेमतिश्च्यंमेसुमतिश्च्यंमे
षज्ञेनंकल्प्यन्ताम् ॥ ११ ॥ व्व्रीहयंश्च्यमे
षवांश्च्यमेमाषांश्च्यमेतिलांश्च्यमेमुद्गाश्च्यंमे
खल्ल्वांश्च्यमेप्प्रियङ्गंवश्च्यमेऽणांवश्च्यमे
श्यामाकांश्च्यमेनीवारांश्च्यमेगोधूमांश्च्यमे
मसूरांश्च्यमेषज्ञेनं कल्प्यन्ताम् ॥ १२ ॥ (न०)
अश्म्मांचमे मृत्तिंकाचमे गिरयंश्च्यमे

पर्व्वताश्च्च मे सिकताश्च्च मे व्वनस्प्पतयश्च्च मे
हिरण्ण्यञ्च्च मेऽयश्च्च मे श्यामञ्च्च मे लोहञ्च्च मे
सीसञ्च्च मे त्रपु च मे षज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ १३ ॥
अग्ग्निश्च्च मऽआपश्च्च मे व्वीरुधश्च्च म
ऽओषधयश्च्च मे कृष्ट्टपच्च्याश्च्च मे
ऽकृष्ट्टपच्च्याश्च्च मे ग्ग्राम्म्याश्च्च मे पशव
ऽआरण्ण्याश्च्च मे व्वित्तञ्च्च मे व्वित्तिश्च्च मे
भूतञ्च्च मे भूतिश्च्च मे षज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ १४ ॥

व्वसुंचमेव्वसतिश्च्यंमेकर्म्मंचमेशक्तिंश्च्यमे
र्त्थंश्च्यम ऽएमंश्च्यम ऽइत्याचंमेगतिंश्च्यमे
षज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १५ ॥ (न०) ॥
अग्निश्च्यंम ऽइन्द्रंश्च्यमेसोमंश्च्यम ऽइन्द्रंश्च्यमे
सविताचंम ऽइन्द्रंश्च्यामे सरंस्वतीचम
ऽइन्द्रंश्च्यमेपूषाचंम ऽइन्द्रंश्च्यमे बृहस्पतिं
श्च्यम ऽइन्द्रंश्च्यमेषज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १६ ॥
मित्रश्च्यंम ऽइन्द्रंश्च्यमेव्वरुंणश्च्यम ऽइन्द्रंश्च्यमे

धाताचमऽइन्द्रश्च्चमेत्त्वष्टाचमऽइन्द्रश्च्चमे
मरुतश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे विश्वेचमेदेवा
ऽइन्द्रश्च्चमे षज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १७ ॥
पृथिवीचमऽइन्द्रश्च्चमेऽन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्च्चमे
द्यौश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेसमाश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे
नक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्च्चमेदिशश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे
षज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१८ ॥(न०) ॥अꣳशुश्च्चमे
रश्मिश्च्चमेऽदाभ्यश्च्चमेऽधिपतिश्च्चम

ऽउपाꣳशुश्च मेऽन्तर्य्यामश्च मऽऐन्द्रवाय
वश्च मे मैत्रावरुणश्च मऽआश्विनश्च मे
प्प्रतिप्प्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे
यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥ १९ ॥ आग्ग्रयणश्च मे
व्वैश्वदेवश्च मे द्ध्रुवश्च मे व्वैश्वानरश्च म
ऽऐन्द्राग्ग्नश्च मे महाव्वैश्वदेवश्च मे मरुत्वती
याश्च मे निष्केवल्ल्यश्च मे सावित्रश्च मे
सारस्वतश्च मे पात्क्नीवतश्च मे

हारियोजनश्च्यंमेषज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २० ॥
स्रुचंश्च्यमेचमसाश्च्यंमेव्वायव्व्यानिचमे
द्रोणकलशश्च्यंमेग्ग्रावांणश्च्यमेऽधिषवंणे
चमेपूतभृच्यंमऽआधवनीयंश्च्यमेव्वेदिंश्च्यमे
बर्हिश्च्यंमेऽवभृथश्च्यंमेस्वगाकारश्च्यंमे
षज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २१ ॥ (न०) ॥
अग्ग्निश्च्वंमेघर्म्मश्च्यंमेऽर्क्कश्च्यंमेसूर्य्यंश्च्यमे
प्प्राणाश्च्यंमेऽश्वमेधश्च्यंमेपृथिवीचमे
ऽदितिश्च्यमेदितिंश्च्यमेद्यौश्च्यंमेऽङ्गुलंयः

शक्क॑रयो॒दिश॑श्चमे य॒ज्ञेन॑कल्पन्ताम्
॥ २२ ॥ व्व्रतञ्च॑मऽऋ॒तव॑श्च्चमे त॒पश्च्चमे
संव्वत्स॒रश्च्च॑मेऽहो॒रा॒त्रेऽऊर्व्वष्ठी॒वेबृ॑हद्द्रथन्त॒रे
च॑मे य॒ज्ञेन॑ल्पन्ताम् ॥ २३ ॥ (न०) ॥
एका॑चमे ति॒स्त्रश्च्च॑मे ति॒स्त्रश्च्च॑मे पञ्च॑चमे
पञ्च॑चमे स॒प्तच॑मे स॒प्तच॑मे नव॑चमे नव॑चम
ऽएका॑दशचम॒ऽएका॑दशचमे त्रयो॑दशचमे
त्रयो॑दशचमे पञ्च॑दशचमे पञ्च॑दशचमे
स॒प्तद॑शचमे॒स॒प्तद॑ शचमे॒नव॑दशचमे॒नव॑दशचम

ऽएकं विꣳशतिश्च्याम ऽएकं विꣳशतिश्च्यामे
त्रयो विꣳशतिश्च्यामे त्रयो विꣳशतिश्च्यामे
पञ्च विꣳशतिश्च्यामे पञ्च विꣳशतिश्च्यामे
सप्त विꣳशतिश्च्यामे सप्त विꣳशतिश्च्यामे
नव विꣳशतिश्च्यामे नव विꣳशतिश्च्याम
ऽएकं त्रिꣳशच्च्याम ऽएकं त्रिꣳशच्च्यामे त्रयस्त्रिꣳ
शच्च्यामे षज्ञेनं कल्प्यन्ताम् ॥ २४ ॥ (न०) ॥
चतस्त्रश्च्यामे ऽष्टौ च मे ऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे
षोडश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च्या मे विꣳ

शतिश्च्चामे चतुर्व्विंꣳशतिश्च्चामे चतुर्व्विंꣳ
शतिश्च्चामेऽष्टाविंꣳशतिश्च्चामेऽष्टाविंꣳ
शतिश्च्चमे द्वात्रिंꣳशच्चमे द्वात्रिंꣳशच्चमे षट्त्रिंꣳ
शच्चामे षट्त्रिंꣳशच्चामे चत्त्वारिꣳशच्चामे
चत्त्वारिꣳशच्चामे चतुश्च्चत्त्वारिꣳशच्चामे
चतुश्च्चत्त्वारिꣳशच्चमेऽष्टाचत्त्वारिꣳशच्चमे
षज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥ २५ ॥ (न०) ॥
त्र्यविश्च्चमे त्र्यवीचंमे दित्यवाट्चंमे दित्यौही

चमेपञ्चाविश्च्चमेपञ्चावीचमेत्रिवत्सश्च्चमे
त्रिवत्साचमेतुर्यवाट्चमेतुर्यौहीचमे
षज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २६ ॥ पष्ठवाट्चमे
पष्ठौहीचमऽउक्षाचमेव्वशाचमऽऋषभश्च्चमे
व्वेहच्चमेऽनड्वाँश्च्चमेधेनुश्च्चमेयज्ञेन
कल्पन्ताम् ॥ २७ ॥ (न०) ॥ व्वाजायस्वाहा
प्प्रसवायस्वाहाऽपिजायस्वाहाक्क्रतवेस्वाहा
व्वसवेस्वाहाऽहर्प्पतयेस्वाहाह्नेमुग्धायस्वाहा

मुग्धायंव्वैनꣳशिनायस्वाहाव्विनꣳशिन
ऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्यायभौवनायस्वाहा
भुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वा हाप्प्रजापतये
स्वाहा ॥ इयन्ते राण्मित्रायं षन्तासि षमन
ऽऊर्ज्जैत्त्वाव्वृष्ट्यैत्त्वाप्प्रजानान्त्वाधिपत्त्याय
॥ २८ ॥ आयुर्ष्यज्ञेनकल्प्पताम्प्प्राणोषज्ञेन
कल्प्पताञ्चक्षुर्ष्यज्ञेन कल्प्पताꣳ श्श्रोत्रंषज्ञेन
कल्प्पतांव्वाग्ग्यज्ञेनकल्प्पताम्मनोषज्ञेन

कल्प्पतामात्त्मा षज्ञेनं कल्प्पतां ब्रह्मा षज्ञेनं
कल्प्पताञ्ज्योतिं ठर्षज्ञेनं कल्प्पताꣳ
स्वठर्षज्ञेनं कल्प्पतां पृष्ठंठषज्ञेनं कल्प्पतां
षज्ञो षज्ञेनं कल्प्पताम् ॥ स्तोमंश्च्च षजुंश्च्च
ऽऋक्च सामंच बृहच्चांरथन्तरञ्च ॥ स्वंर्द्देवा
ऽअगन्मामृताऽअभूम प्प्रजापतेः प्प्रजाऽअंभूम
व्वेट्स्वाहा ॥ २९ ॥

इत्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ शान्त्यध्यायः

हरिः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुः प्प्रपद्ये
सामंप्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥
व्वागोजं÷सहौजोमयिंप्प्राणापानौ ॥ १ ॥
यन्मेंछिद्रञ्चक्षुंषोहृदंयस्यमनंसोव्वातिं
तृण्णम्बृहस्प्पतिंर्म्मे तद्दंधातु ॥शन्नोंभवतु
भुवंनस्ययस्प्पतिं÷ ॥ २ ॥ भूर्ब्भुवः स्वः÷ ।
तत्त्सवितुर्व्वरेंण्यम्भर्गोंदेवस्यंधीमहि ॥

धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ कयानश्चित्र
ऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाश
चिष्ठयावृता ॥ ४ ॥ कस्त्वासत्योमदानाम्मं
हिष्ठोमत्सदन्धसः ॥दृढाचिदारुजेवसु
॥ ५ ॥ अभीषुणः सखीनामविताजरितृणाम् ॥
शतम्भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥ कयात्वन्न
ऽऊत्याभिप्रमन्दसेवृषन् ॥ कयास्तोतृभ्य
ऽआभर ॥ ७ ॥ इन्द्रोविश्वस्यराजति ॥ शन्नो

ऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमित्रः
शंव्वरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रो
बृहस्पतिः शन्नोविष्णुरुरुक्रमः ॥ ९ ॥
शन्नोव्वातः पवता ँ शन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥
शन्नः कनिक्कदद्देवः पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु
॥ १० ॥ अहानिशम्भवन्तुनः शꣳरात्रीः
प्रतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्नीभव तामवोभिः
शन्नऽइन्द्रावरुणाराताहव्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणा

व्वाजंसातौशमिन्द्रासोमांसुवितायशंय्योः
॥ ११ ॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु
पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ १२ ॥ स्योना
पृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्म्म
सप्रथाः ॥ १३ ॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तान
ऽऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १४ ॥
योवः शिव तमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥
उशतीरिवमातरः ॥ १५ ॥ तस्म्मा
ऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ॥

आपो॑ज॒नय॑थाचनः ॥ १६ ॥ द्यौः॒शान्ति॑

र॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ॒ शान्ति॑ः पृथि॒वीशान्ति॒राप॒ः शान्ति॒रो

ष॑ध॒यः॒ शान्ति॑ः ॥ व॒न॒स्प्पत॑य॒ः शान्ति॒र्व्विश्वे॑

दे॒वाः॒शान्ति॒र्ब्ब्रह्म॒शान्ति॒ः सर्व्व॒ꣳ॒ शान्ति॒ः

शान्ति॒रे॒वशान्ति॒ः सा॒मा॒शान्ति॒रे॑धि ॥ १७ ॥

दृते॒दृꣳह॑मा॒मि॒त्रस्य॑मा॒चक्षु॑षा॒सर्व्वा॑णिभू॒ता॒नि॒

समी॑क्षन्ताम् ॥ मि॒त्रस्या॒हञ्चक्षु॑षा॒सर्व्वा॑णि

भू॒ता॒नि॒समी॑क्षे ॥ मि॒त्रस्य॒चक्षु॑षा॒समी॑क्षा

म॒हे ॥ १८ ॥ दृते॒दृꣳह॑मा । ज्ज्योक्त्ते॑स॒न्दृशि॑

जीव्व्यास॒ञ्ज्योक्क्तें स॒न्दृशिं जीव्व्यासम्
॥ १९ ॥ नमस्ते हर॑से शो॒चिषे नमस्ते
ऽअस्त्वर्च्चिषें ॥ अ॒न्न्याँस्तें ऽअ॒स्म्मत्तंपन्तु हे॒तयं÷
पावकोऽअ॒स्म्मब्भ्यंᳪ शि॒वो भंव ॥ २० ॥
नमस्तेऽअस्तु वि॒द्युते॒ नमस्ते स्तनयि॒त्नवें ॥
नमंस्तेभगवन्नस्तुयतᳪ स्व॒÷ समीहंसे ॥ २१ ॥
यतोंयतᳪ स॒मीहंसे॒ततोंनो॒ऽअभं यङ्कुरु ॥ शन्नं÷
कुरुप्प्र॒जाब्भ्योऽभंयन्नᳪ प॒शुब्भ्यं÷ ॥ २२ ॥
सु॒मि॒त्त्रि॒यान॒ऽआप॒ऽओषंधयᳪ सन्तुदुर्म्मित्त्रि॒

यास्तस्म्मै सन्तु योऽस्म्मान्द्वेष्ट्टि यञ्च्च
वयन्द्विष्म्मः ॥ २३ ॥ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ता
च्छुक्क्रमुच्चरत् ॥ पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः
शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्ब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः
शतात् ॥ २४ ॥

इति शान्त्यध्यायः ।

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।

हरि÷ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाꣳ
स्वस्तिन÷पूषाविश्ववेदाꣳ ॥ स्वस्तिन
स्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिꣳ स्वस्तिनोबृहस्पति
र्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पय÷पृथिव्याम्पय
ऽओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाꣳ ॥
पयस्वतीꣳ प्रदिश÷ सन्तुमह्यम् ॥ २ ॥
ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोꣳ श्नप्त्रेस्थो

विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥
वैष्णवमसि विष्णवे त्त्वा ॥ ३ ॥ ॐ
अग्निर्द्देवतावातोदेवतासूर्य्योदेवताचन्द्रमा
देवतावसवोदेवतारुद्रादेवताऽऽदित्त्यादेवता
मरुतोदेवताविश्वेदेवादेवताबृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रो
देवतावरुणोदेवता ॥ ४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो
नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां

भवोद्भवाय नमः ॥ ५ ॥ वामदेवाय नमो
ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय
नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय
नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ ६ ॥
अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु
रुद्ररूपेभ्यः ॥ ७ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे

महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषाय

सुप्प्रजास्त्वायंसुवीर्य्यांय ॥ १० ॥

ॐ व्विश्वांनिदेवसवितर्दुरितानिपरांसुव ॥

यद्भद्रन्तन्नऽआसुंव ॥ ११ ॥ ॐ द्यौः शान्तिं

रन्तरिक्षꣳ शान्तिं÷पृथिवीशान्तिरापः शान्ति

रोषंधयः शान्तिं÷ ॥ व्वनस्पतंयः शान्तिर्व्विश्वें

देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः

शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिं रेधि ॥१२ ॥

ॐ सर्व्वेषां वा एष व्वेदानाꣳ रसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदानाꣳरसेनाभिषिञ्चति ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अनेनश्रीरुद्राभिषेककर्मणाश्रीभवानी शङ्कर महारुद्रः प्रीयतां न मम।

ॐ साम्ब सदाशिवार्पणमस्तु।

षडङ्गन्यासः-

मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहती छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्त्वरिष्टंयज्ञठ॰ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्॥ प्रतिष्ठ॥

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥

अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः।

ॐ अबोंद्ध्यग्निः समिधा जनांनां प्रतिं धेनुमिंवा यतीमुषासंम्। यह्वा ऽइंव प्रवया मुज्जिहांनाः प्रभानवंः सिस्रतेनाकमच्छं ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे विनियोगः।

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअंरतिम्पृंथिव्यावैंश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविंठ० सम्म्राजमतिंथिं जनांनामासन्ना पात्रं जनयन्तदेवाः ॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः कवचन्यासे विनियोगः

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप् छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः।

ॐ व्विश्वतश्च्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एक÷॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ मा नं स्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नों व्वीरान्रुद्र भामिनों व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ ध्यानम्

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

अथोत्तरपूजनम्

यजमानः देशकालौ संकीर्त्य कृतस्य श्री साम्बसदाशिवस्याभिषेक- कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्यर्थं च श्री साम्ब-सदाशिवस्योत्तरपूजनमहं करिष्ये-इति संकल्प्य श्रीसाम्बसदाशिवस्य षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्-

रुद्रीपाठ का विविध फल

रुद्रीसंख्याफलं देवि शृणुष्व वदतो मम ।
एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥
सङ्कल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सकृत् सकृत् ।
स्नात्वा पञ्चामृतेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥
बालग्रहोपशान्त्यर्थमेकावृत्तिमुदीरयेत् ।
उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥
ग्रहोपशान्त्यै कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने ।
महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥

नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ।
राजवश्ये विभूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥
रुद्रैस्त्रिभिः कामसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ।
शत्रुश्च पञ्चभी रुद्रैस्तथा स्त्री वश्यतामियात् ॥ ६ ॥
सौख्यं स्यात्सप्तभी रुद्रैः शिवमाप्नोति मानवः ।
नवरुद्रैः पुत्रपौत्रधनधान्यसुतान्वितः ॥ ७ ॥
राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनाय ततः परम् ॥ ८ ॥
अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रियै ।
राजवृद्धिप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ ९ ॥
त्रिभिश्चैव महारुद्रैरसाध्यासाधनाय च ।

पञ्चभिश्च महारुद्रैः राज्यकामः प्रसाध्यते ॥ १० ॥
सप्तभिश्च महारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
नवभिश्च महारुद्रैः पुनर्जन्म न जायते ॥ ११ ॥
अतिरुद्रैकसंख्येन देवत्वं प्राप्नुयान्नरः ।
डाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १२ ॥
भूतप्रेतपिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
ग्रहदोषदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १३ ॥
ज्वरातिसारदोषादौ वातपित्तकफादिषु ।
सर्वरोगोपशान्त्यर्थं सप्तावृत्तिन्न संशयः ॥ १४ ॥
सर्वार्थसाधनायैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।
असाध्यरोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥

अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्याय वै पुनः ।
सर्वशान्तिर्भवेत्तत्र रुद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥

भगवान् शिव ने पार्वती से रुद्री के पाठ का फल इस प्रकार कहा है-शिवपूजक सर्वप्रथम संकल्प कर अङ्गन्यास करे। पश्चात् शिव को पञ्चामृत से स्नान करावे और ध्यानपूर्वक जप करे। रुद्री के एक पाठ से बाल ग्रहों की शान्ति, तीन पाठ से उपसर्ग (उपद्रव) की शान्ति, पाँच पाठ से ग्रहों की शान्ति, सात पाठ से महाभय की शान्ति, नव पाठ से सर्वविध शान्ति और वाजपेय यज्ञ की फल-प्राप्ति, ग्यारह पाठ से राजा का

वशीकरण और विविध विभूतियों की प्राप्ति होती है। तीन रुद्रों से कामना की सिद्धि और शत्रुओं का नाश, पाँच रुद्रों से शत्रु और स्त्री का वशीकरण, सात रुद्रों से सुखप्राप्ति, नव रुद्रों से पुत्र-पौत्र और धन-धान्य की समृद्धि होती है। एक महारुद्र से राजभय का नाश, शत्रु का उच्चाटन, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश, आरोग्य, यश और श्रीकी प्राप्ति तथा राजा से वृद्धि प्राप्त होती है। तीन महारुद्रों से असाध्य कार्य की सिद्धि, पाँच महारुद्रों से राज्यकामना की सिद्धि, सात महारुद्रों से सप्तलोक की सिद्धि, नव महारुद्रों से पुनर्जन्म की निवृत्ति होती है। एक अतिरुद्र से देवत्व की प्राप्ति, डाकिनी

आदि से भय की निवृत्ति, तीन अतिरुद्र से भूतादिकों से भय की निवृत्ति, पाँच अतिरुद्र से ग्रहदोष की शान्ति, सात अतिरुद्र से ज्वर, अतिसार, वात, पित्त, कफ आदि दोषों की शान्ति, नव अतिरुद्र से सर्वार्थसिद्धि, अल्पमृत्यु का विनाश और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ग्यारह अतिरुद्र से समस्त प्रकार की शान्ति होती है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

रुद्राभिषेक के लिये विविध द्रव्य और उनका विविध फल

लिख्यते च मया द्रव्यमभिषेकात्मकं परम् ।
जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः ॥ १ ॥

दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च ।
मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ॥ २ ॥
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना ॥ ३ ॥
सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया ॥ ४ ॥
घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम् ।
तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः ॥ ५ ॥
प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम् ।
केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः ॥ ६ ॥

शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत् ।
श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥ ७ ॥
सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ।
मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात् ॥ ८ ॥
पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा ।
जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै ॥ ९ ॥
पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्च्चेच्छिवं तथा ।
महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा ॥ १० ॥
कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम् ।

श्री शंकरजी की आरती

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि॥

जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धङ्गी धारा॥

ॐ हर हर हर महादेव।

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजैं।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै॥

दोभुज चारु चतुर्भुज, दसभुज अति सोहैं।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन-जन मोहैं॥

अक्षमाला, बनमाला, रुण्डमालाधारी।

त्रिपुरारी कंसारी करमालाधारी ॥ ॐ हर... ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।

सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ हर... ॥

करमध्ये सुकमण्डलु चक्र शूल धारी।

सुखकारी दुखहारी जगपालनकारी ॥ ॐ हर... ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर (ॐ) में शोभित, ये तीनों एका ॥ ॐ हर... ॥

त्रिगुण स्वामी की आरती, जो कोइ नर गावै।

भाव-भक्ति के कारण मनवांछित फल पावै॥ ॐ हर... ॥